B-2
L-19
Modern
India

12/01/24

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

• वस्तुतः भारतीय समाज जो वैदिक युग में वर्ण व्यवस्था के आधार पर समानता व योग्यता पर आधारित था किन्तु धीरे-धीरे विभिन्न कारणों से वह अपनी गतिशीलता खोने लगा और जन्म या जाति आधारित व्यवस्था की ओर बढ़ने लगा, जिससे समाज में विभिन्न प्रकार की समस्याओं व असमानताओं ने जन्म लिया और इसी संदर्भ में 19 वीं सदी का भारतीय समाज विशेषतः महिलाओं और दलित वर्ग को लेकर इतना सामंतवादी हो चला था कि इन्हें एक प्रकार से मानवाधिकारों से ही वंचित कर दिया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

a) दलित वर्ग को सामान्यतः निम्न समझे जाने वाले कार्य सौंपे जाते थे और यहाँ तक कि उनके मंदिर प्रवेश को भी प्रतिबंधित कर दिया गया था। इस जातीय विभाजन में अस्पृश्य वर्ग की संकल्पना अमानवीय थी, जिस पर कोई भी समाज गर्व महसूस नहीं कर सकता। इस तरह हमारा समाज विभिन्न जातियों व उप-जातियों में बंटकर जटिल हो चला था और हमारी सामाजिक एकता कमजोर हो गयी थी।

b) नारियों की स्थिति भी नारकीय हो चली थी। बाल विवाह, अशिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा व सती प्रथा जैसी कुरीतियों ने उन्हें

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सामाजिक संरचना में हाशिए पर ला दिया। इस तरह भारत की लगभग आधी आबादी को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से अलग कर दिया गया था। अतः स्वाभाविक था कि भारत एक राष्ट्र के रूप में अपनी मजबूती खोने लगा।

• तात्कालीन भारतीय समाज परम्परा, आस्था व अंधविश्वास के आधार पर निर्णय लेने लगा था और उसकी वैज्ञानिकता भी धीरे-धीरे कमजोर होने लगी थी। यहाँ तक कि बाहरी दुनिया से सम्पर्क कट जाने के कारण उसे नए परिवर्तनों व खोजों के बारे में भी पता नहीं चल सका।

• स्पष्ट है कि जो समाज अपनी वैज्ञानिकता खो बैठता है, वह पतनशील हो जाता है

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

और इन्हीं कमियों के कारण विदेशी आक्रांताओं ने भारत पर शासन किया और विशेषतः औपनिवेशिक शासन के संदर्भ में गुरुदेव टैगोर की यह टिप्पणी सटीक बैठती है कि. "शैतान वहीं बसते हैं, जहां उन्हें खोंट दिखायी दे।"

• भारत में समाज व धर्म एक-दूसरे से गहनता से जुड़े हैं इसीलिए सुधारकों ने यह आंकलन किया कि बिना धर्म सुधार के समाज सुधार संभव नहीं हैं क्योंकि सामाजिक कुरीतियों को भी धर्म का आवरण दे दिया गया हैं। अतः कहा जा सकता है कि इस आंदोलन का प्रारंभिक विषय समाज सुधार था और कुछ विद्वान इसी संदर्भ में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों को धर्मनिरपेक्ष मानते हैं।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

• आधुनिक भारत के सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन को पुनर्जागरण भी कहा गया। स्मरणीय है कि यूरोप में 14वीं से 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक साहित्य, कला, दर्शन, विज्ञान व मानववादी विचारों को बढ़ावा दिया गया था और मानवीय पक्ष से जुड़े लगभग सभी आयामों से रूढ़िवादिताओं को दूर करने का प्रयास किया गया और चूंकि यह यूरोप के अतीत गौरव की वापसी से प्रेरित था अतः पुनर्जागरण कहलाया।

• इसी तर्ज पर कुछ विद्वानों ने आधुनिक भारत के सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलनों की यूरोपीय पुनर्जागरण से तुलना कर, इसे पुनर्जागरण कहकर ब्रिटिश शासन के औचित्य को सिद्ध करना चाहा तथा भारत में

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सभ्यता व आधुनिकीकरण के प्रसार का श्रेय लेना चाहा।

- किन्तु यदि यूरोपीय पुनर्जागरण से हमारे सुधार आंदोलन की तुलना की जाए तो जहां यूरोप में भौगोलिक खोजें, कला व साहित्य, मानववादी दर्शन तथा विज्ञान व तकनीक सभी पहलुओं पर आधुनिकता की पहल की गयी थी जबकि भारत के सुधारों में उतना व्यापक प्रयास नहीं किया गया। अतः यूरोपीय पुनर्जागरण के मानकों पर आधुनिक भारत का सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन खरा नहीं उतरता। वस्तुतः इसमें पुनर्जागरण व नवजागरण दोनों के तत्व उपस्थित थे और इसे सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन कहना ही अधिक तार्किक होगा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन का स्वरूप

- आधुनिक भारत के सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन के स्वरूप निर्धारण के लिए प्रवृत्तियों के आधार पर इसे मुख्यतः दो भागों में बांटकर देखा जा सकता है:-

a) <u>प्रगतिशीलवाद</u>:- इस मत के समर्थकों का मानना था कि भारतीय समाज में व्याप्त जटिलताओं और कुरीतियों का अंत तभी किया जा सकता है, जब <u>पाश्चात्य संस्कृति के कुछ ऐसे तत्वों को अपनाया जाए, जो भारतीय संस्कृति से मेल खाते हो।</u>

स्पष्ट होना चाहिए कि इन विचारकों ने पश्चिम का अंधानुकरण नहीं बल्कि उन्हीं पश्चिमी मूल्यों को अपनाने की बात कही जो भारतीय समाज सुधार के लिए

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

आवश्यक हो और हमारे समाज के मूल ढाँचे को नष्ट नहीं करते।

इन विचारकों ने समाज में गतिशीलता लाने के लिए तर्कवाद व बुद्धिवाद पर बल दिया तथा संविधान व कानून के माध्यम से सामाजिक सुधारों का प्रयास किया और इन्हीं की प्रेरणा से 1829 में सती प्रथा निषेध अधिनियम और 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम जैसे प्रगतिशील कानून पारित हुए।

इन विचारकों ने अँग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया और इस प्रवृत्ति के मुख्य उदाहरण ब्रह्म समाज व अलीगढ़ आंदोलन थे।

b) पुनर्स्थापनावाद :- इन विचारकों का लक्ष्य भारतीय समाज को अपनी संस्कृति के

वास्तविक मूल्यों के आधार पर सुधार करना था। इनका मानना था कि भारत व भारतीय समाज की दुर्दशा इसीलिए हुई है कि हम अपने वास्तविक प्राचीन मूल्यों से विमुख हो गए हैं।

इन विचारकों ने भारतीय समाज में बढ़ते पाश्चात्य प्रभाव का विरोध किया और स्पष्ट कहा कि हमारी मूल संस्कृति में वे सभी तत्व उपस्थित है जिनसे समाज को गतिशील बनाया जा सकता है। आवश्यकता है सही और वास्तविक व्याख्या की। इस प्रवृत्ति का मार्गदर्शक नारा था, "वेदों की ओर लौटो।"

स्पष्ट होना चाहिए कि इसका आशय वैदिक युग में लौटना नहीं या मध्यकालीन इतिहास की अनदेखी करना नहीं,

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

प्रहार कर समाज को यह सोचने पर मजबूर किया कि अब सामाजिक सुधार अवश्यंभावी हो गए हैं। डेरीजियो ने तो यहाँ तक कहा कि भारतीय समाज इतना जटिल हो चला है कि जब तक इसके मूल ढाँचे को ही न बदल दिए जाए तब तक सुधार की अपेक्षा नहीं की जा सकती। इस अतिवादिता ने इस प्रवृत्ति को भारत में अधिक लोकप्रिय नहीं होने दिया। पर यह तो स्वीकारना ही होगा कि इसने हमारी सामाजिक जड़ता को तोड़ने का प्रयास किया और हम समाज सुधारों के प्रति सक्रिय हो उठे।

- इस आंदोलन की एक स्वरूपगत विशेषता यह है कि 19 वीं सदी के सुधार आंदोलन नारी केन्द्रित अधिक थे तो वहीं 20 वीं सदी के आंदोलन निम्नजाति उत्थान पर केन्द्रित थे और साथ ही इस आंदोलन का

स्वरूप नगरीय अधिक था।

- प्रगतिशील व पुनर्स्थापनावाद के स्वरूप में अंतर होते हुए भी मूलतः दोनों ही मानवतावादी विचारक थे और दोनों ही प्रवृत्तियों ने सुधार के लिए शिक्षा को सबसे अनिवार्य तत्व माना और विशेषतः नारी शिक्षा को सुधार के लिए हथियार माना। दोनों ही प्रवृत्तियों ने स्पष्ट कहा कि शोषित वर्ग के उत्थान के बिना भारत का गौरव स्थापित नहीं किया जा सकता। अतः कहा जा सकता है कि दोनों ही प्रवृत्तियों के साधन भले ही भिन्न हो किन्तु साध्य दोनों का ही समान था।

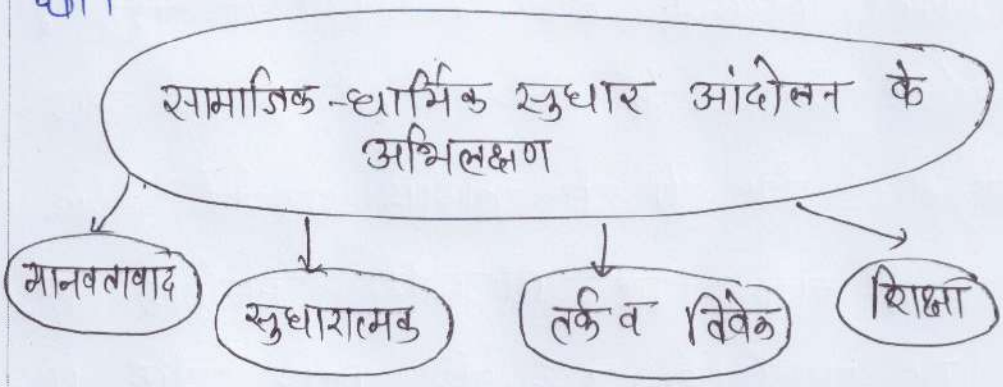

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Platform
KHAN SIR

- मानवतावाद — मानव कल्याण
  - यथार्थवाद
  - लौकिकतावादी

- सुधारात्मक → "यदि समाज और धर्म में टकराव होगा, तो धर्म में सुधार करना होगा।" — गोपाल हरि देशमुख "लोकहितवादी"

- तर्कवाद → बाल विवाह निषेध
  - प्रगतिशीलवादियों ने चिकित्सा के आधार पर विरोध किया।
  - पुनर्स्थापनावादियों ने शास्त्र व्यवस्था के आधार पर विरोध किया।

- शिक्षा → मूल बिन्दु - नारी शिक्षा

प्रश्न:- "हमें अपने घर की खिड़कियां खुली रखनी चाहिए जिससे ताजी हवा अंदर आ सके किन्तु अपने दरवाजे बंद रखने चाहिए हवा इतनी तेज न आ सके कि हमारे पैर ही उखड़ जाए।"

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR